

भूगोल में व्यवहारवाद

B.A Part-3

Dr. Sandip Sagar
Assistant Professor
P.G. Dept. of Geography
H.D. Jain College Ara

भूगोल में व्यवहारवाद

भूगोल में व्यवहारवाद का विकास क्यों हुआ?

- 1970 के दशक में, भूगोल में, मात्रात्मक क्रांति और प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण के खिलाफ काफी में असंतोष था इसी असंतोष के कारण भूगोल में व्यवहारवाद का विकास हुआ।

व्यवहारवाद के विकास के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं:

जैसा कि मात्रात्मक क्रांति और प्रत्यक्षवादी दृष्टिकोण का मानना है कि मानवीय निर्णय हमेशा लाभ बढ़ाने वाले होते हैं, लेकिन वास्तव में मानवीय निर्णय हमेशा लाभ बढ़ाने वाले ना होकर केवल संतोषजनक भी होते हैं।

- वोल्पर्ट के अध्ययन के अनुसार, स्वीडिश किसानों द्वारा इष्टतम कृषि पद्धति नहीं की जाती है, हालांकि बहुत उपजाऊ और उत्पादक भूमि होने के बावजूद, वे 60% उत्पादकता से संतुष्ट थे।
- भारतीय किसानों ने भी अतिरिक्त उर्वरक का उपयोग किया जो भूमि की दीर्घकालिक उत्पादकता को कम कर देता है। इनका निर्णय तत्कालीन संतोष देता है।

उपरोक्त दो उदाहरणों से, हम कह सकते हैं कि मनुष्य का निर्णय हमेशा लाभ को अधिकतम करने के लिए नहीं होता है , बल्कि केवल मनुष्य को संतुष्ट करने वाले होते हैं।

मनुष्य का निर्णय प्रकृति में हमेशा वस्तुनिष्ठ नहीं होता है, मनुष्य के निर्णय व्यक्तिपरक होता है। मानवीय निर्णयों को मात्रात्मक उपकरण के अनुसार निर्धारित नहीं किया जा सकता है।

चूंकि मात्रात्मक क्रांति निर्णय लेने में मानवीय मूल्यों, विश्वास, संस्कृति आदि की भूमिका को अस्वीकार करती है; वास्तविकता अलग है, मानव निर्णय में मूल्यों, संस्कृति, धर्म का योगदान दैनिक जीवन में देखा जा सकता है। **उदाहरण के लिए,**

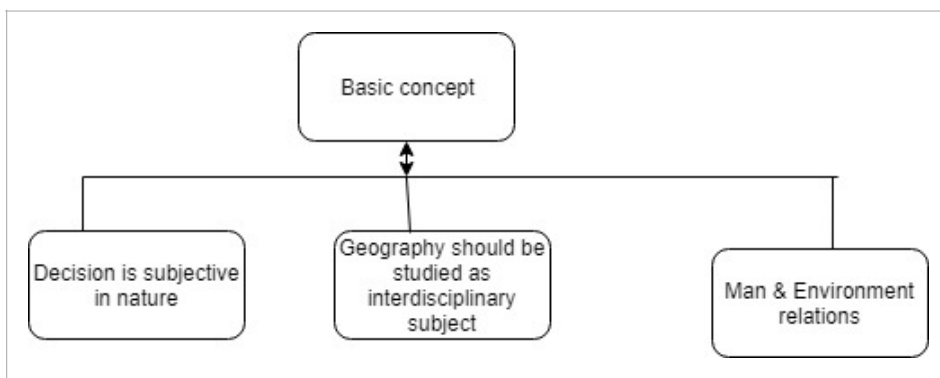
- मंदिर जाना पूरी तरह से धार्मिक फैसला है, आर्थिक फैसला नहीं।
- कुछ लोग जरूरतमंदों को कंबल दान करना पसंद करते हैं और कुछ लोग घर/ मंदिर में जागरण या हरि कथा करना पसंद करते हैं।

अतः हम कह सकते हैं कि मानवीय निर्णयों को वस्तुपरक नहीं बनाया जा सकता।

भूगोल में व्यवहारवाद की मूल अवधारणा:

- व्यवहारवाद ने मनुष्य के निर्णय लेने के लिए आर्थिक कारक के आलावा अन्य कारक जैसे जातीयता, आयु, पेशे, ज्ञान, जाति, धर्म आदि को भी सम्मिलित करने पर जोर दिया

निम्नलिखित चित्र व्यवहारवाद की मूल अवधारणा को दर्शाता है:



मानव निर्णय प्रकृति व्यक्तिपरक है:

वास्तव में, जैसा कि हम जानते हैं कि मानव का व्यवहार गतिशील होता है, वही चीज जो आज पसंद होती है, वही व्यक्ति कल उसे नापसंद कर सकता है। मानव निर्णय प्रकृति में व्यक्तिपरक है और सभी मनुष्य के निर्णय को एक ही लाठी से नहीं हाक सकते हैं। मानव व्यवहार या मानव की पसंद न केवल लाभ से प्रभावित होता है, जैसा कि मात्रात्मक दृष्टिकोण मानता है, बल्कि निम्नलिखित के द्वारा भी प्रभावित होता है :

- पूर्वज्ञान
- सदाचार , नैतिकता
- संस्कृति, धर्म
- समय या स्थिति
- आर्थिक जरूरत

उदाहरण के लिए:

कुछ लोग पैसे से ज्यादा समय को महत्व देते हैं, कुछ लोग समय बचाने के लिए महंगी फ्लाइट लेते हैं तो कुछ पैसे बचाने के लिए पैसेंजर ट्रेन से सफर करते हैं।

भूगोल में माइंड मैप :

प्रत्येक व्यक्ति की पर्यावरण की अपनी अनुभूति होती है और यह अनुभूति उसके नैतिक, पूर्व-ज्ञान, सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि पर निर्भर करती है। प्रत्येक व्यक्ति के मानव मस्तिष्क में एक पर्यावरणीय छवि बनती है, जिसे मानसिक मानचित्र (माइंड मैप) भी कहा जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति का अपना माइंड मैप होता है, उदाहरण के लिए,

- प्रत्येक व्यक्ति के पास घर से कार्यालय का रूट मैप होता है और यह रूट मैप हर व्यक्ति के दिमाग में अलग-अलग होता है। कुछ लोग काम दुरी तथा भीड़-भाड़ वाला मार्ग पसंद करते हैं, और अन्य लोग लंबे मार्ग को पसंद करते हैं।
- इस तरह पुरे दिन क्या क्या काम करना है हर ब्यक्ति के दिमाग में माइंड मैप के रूप में बना रहता है।

माइंड मैप और वास्तविक निर्णय लेने पर उच्च संबंध होता है। लोग अपने माइंड मैप के आधार पर निर्णय लेते हैं, उदाहरण के लिए, कार्यालय से घर तक मार्ग का चयन व्यक्ति से अलग-अलग होता है, चयन उसके मानसिक मानचित्र पर आधारित होता है उसी मार्ग से ऑफिस को जाता है।

भूगोल एक अंतःविषय विषय है :

- व्यवहारवाद भूगोल ने भूगोल विषय को एक अंतःविषय के रूप में माना जाता है,
- भूगोल = मनोविज्ञान + समाजशास्त्र + विज्ञान

मानव और पर्यावरण संबंधों में मुख्य बिंदु निम्नलिखित हैं:

- मनुष्य और पर्यावरण गतिशील रूप से परस्पर जुड़े हुए हैं।
- पर्यावरण दोहरी भूमिका निभाता है, वस्तुनिष्ठ वातावरण और व्यवहारिक वातावरण।
- एक वस्तुनिष्ठ वातावरण में, प्रत्येक मनुष्य के लिए वातावरण की अनुभूति एक समान होती है। उदाहरण के लिए,
- यदि बारिश होती है तो सबको लगेगा कि बारिश हो रही है।
- व्यवहारिक वातावरण में पर्यावरण की अनुभूति अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग होती है। पर्यावरण की यह अनुभूति व्यक्तिगत ज्ञान, मूल्यों, संस्कृति, विशिष्ट आवश्यकताओं पर आधारित है।

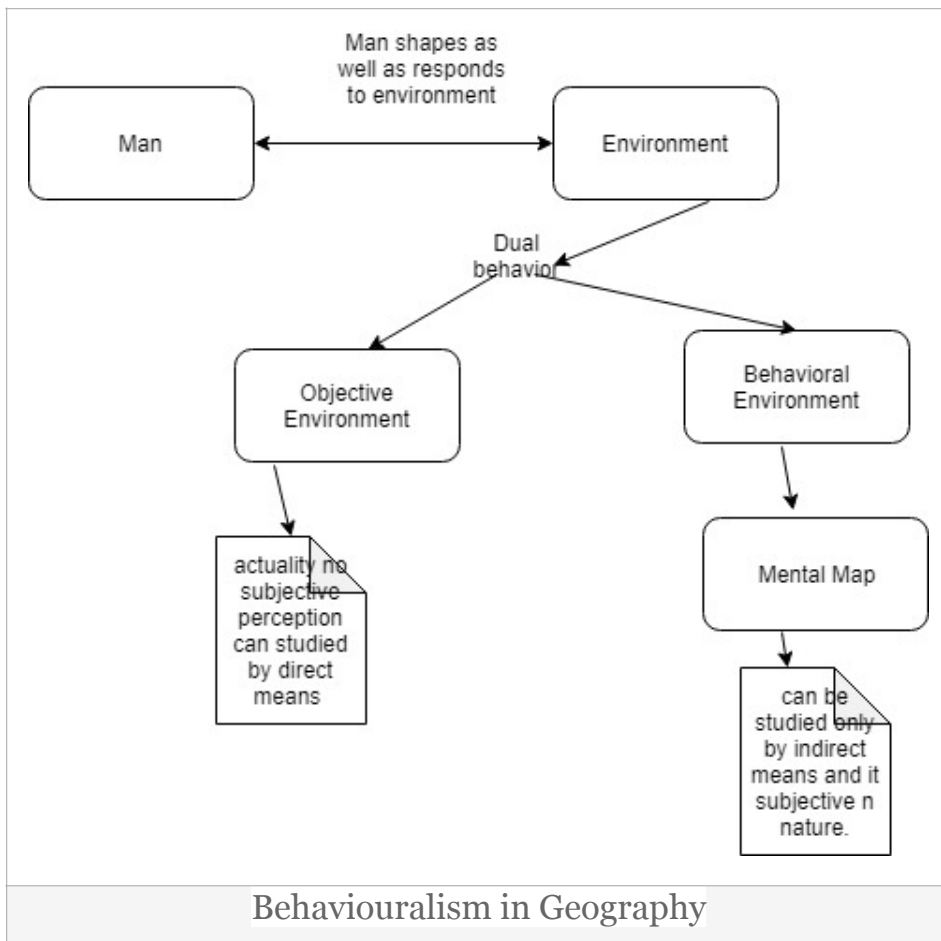
उदाहरण के लिए,

यदि बाहर बारिश होती है, तो किसान, कुम्हार और निर्माण श्रमिकों के लिए बारिश की अनुभूति अलग होगी।

आदिवासी क्षेत्रों में खनन के लिए,

- आदिवासी जंगल का संरक्षण करना चाहते हैं क्योंकि वे इसका उपयोग करते हैं, वे खनिजों का खनन नहीं करना चाहते क्योंकि इससे जंगल नष्ट हो जाता है।
- लेकिन उद्योगपति वन संरक्षण को नहीं, बल्कि खनन को प्राथमिकता देते हैं।
- यहां जनजातियों और उद्योगपतियों के लिए पर्यावरण की धारणा अलग है।

इसलिए, वातावरण यहाँ एक व्यवहारिक वातावरण के रूप में कार्य कर रहा है।



भूगोल में व्यवहारवाद का समर्थन:

व्यवहार दृष्टिकोण के समर्थन में, **किर्क** ने जोर देकर कहा कि:

- एक समान भौगोलिक वातावरण में, एक ही जानकारी का अर्थ एक अलग संस्कृति, जातीयता, नस्ल और आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों के लिए अलग-अलग होगा।
- प्रत्येक समाज संसाधन, स्थान और पर्यावरण के बारे में एक ही जानकारी के लिए अलग तरह से कार्य करता है।

- उदाहरण के लिए, सिंधु-गंगा के मैदान में भूमि के एक टुकड़े के लिए, जाट किसान अपने खेत में गन्ना उगाना पसंद करते हैं जबकि अहीर किसान अपने जानवरों के लिए चारा फसल उगाना पसंद करते हैं।

वोल्पर्ट व्यवहारवाद के समर्थन पर दो अवधारणाएँ देते हैं:

- संतोषजनक अवधारणा, जैसा कि हम पहले ही इस पोस्ट के पहले पैराग्राफ में चर्चा कर चुके हैं।
- उन्होंने गुरुत्वाकर्षण प्रवास सिद्धांत की आलोचना की और व्यवहारवाद के समर्थन के लिए भी यही सच है। उन्होंने जोर देकर कहा कि प्रवास काफी हद तक व्यक्तिगत पसंद पर निर्भर करता है, महिलाएं शायद ही कभी प्रवास करना चाहती हैं, और एक माता-पिता जिनके बच्चे स्कूल में हैं, आर्थिक अवसरों के बावजूद प्रवास नहीं करना चाहते हैं।

ग्लिबर व्हाइट ने अपने बाढ़ अध्ययन में जोर देकर कहा कि:

- लोग नदी की बाढ़ की सीमा को चिह्नित करते हैं, उनका मानना था कि बाढ़ इस सीमा को पार नहीं करेगी।
- कभी-कभी, इस पूर्व-ज्ञान और अति आत्मविश्वास के कारण, बाढ़ पहलू से अधिक विनाश करती है।

व्यवहारवाद की आलोचना

- यह दृष्टिकोण वैज्ञानिक के बजाय अधिक सैद्धांतिक और मनोवैज्ञानिक है।
- इस दृष्टिकोण का उपयोग करके मॉडल को विकसित नहीं किया जा सकता है, क्योंकि इसे ऑब्जेक्टिफाई नहीं किया जा सकता है।
- वस्तुनिष्ठ और व्यक्तिपरक पर्यावरण धारणा जैसी कुछ शब्दावली को अच्छे से परिभाषित नहीं किया गया है।